

केलिनागर (केलि + ना^०) m. *Sensualist* (संभोगवत्) GAṬĀDH. im ÇKDr.
 केलिनकेतन (केलि + नि^०) n. = केलिगृह AMAR. 8.
 केलिमाण्डप (केलि + म^०) m. n. dass. ÇĀNTI. 1, 5.
 केलिमन्दिर (केलि + म^०) n. dass. KĀURAP. 23.
 केलिमुख (केलि + मुख) m. *Liebespiel, Tändelei* TRIK. 1, 1, 130.
 केलिरङ्ग (केलि + रङ्ग) m. *Lustort* Dhṛṭas. 87, 15.
 केलिरैवतक (केलि + रै^०) n. Titel einer Schrift SĪH. D. 206, 1.
 केलिवृत्त (केलि + वृत्त) m. N. eines Baumes, *Nauclea cordifolia* Roxb.
 (कदम्बावशेष, vulg. केलिकदम्ब) ÇABDAR. im ÇKDr.
 केलिशयन (केलि + श^०) n. *Lustlager, Sofa* Glt. 11, 2.
 केलिप्रुपि f. die Erde WILS. — Vgl. केली unter केलि.
 केलिसार्चव (केलि + स^०) m. der für Belustigungen Sorge tragende Minister ÇABDAR. im ÇKDr.
 केलिसदन (केलि + स^०) n. = केलिगृह Glt. 11, 14.
 केलिस्थली (केलि + स्थली) f. *Lustort* ÇĀNTI. 1, 16.
 केलीपिक (केली + पिक) m. ein zum Vergnügen gehaltener Kuckuck SĪH. D. 79, 15.
 केलीवनी (केली + वनी) f. *Lustwald* SĪH. D. 19, 19.
 केनु eine best. Zahl VJUTP. 182. — Vgl. केल.
 केव्, कैवते dienen, aufwarten DhṛṭUP. 14, 39. — Vgl. सेव्.
 कैवट m. Grube NAIGH. 3, 23. माकीं सं शोरि कैवटे RV. 6, 54, 7. — Vgl. श्रवट.
 कैवर्त m. = कैवर्त Fischer DVIRĪPAK. im ÇKDr. श्रवरायं कैवर्तम् VS. 30, 16 (MAHIDH. giebt keine Erklärung).
 कैवल 1) adj. f. ई ved., आ klass. P. 4, 1, 30. mit seinem subst. compon. 2, 1, 19. nom. pl. masc. केवले RV. 10, 51, 9. a) ausschliesslich eigen, nicht mit Andern gemein, eigenthümlich; allein, alles Andere ausschliessend, merus, pur, lauter; ausser aller Beziehung zu etwas Andern stehend, absolut; = एका AK. 3, 4, 26, 205. 1, 16. H. 742. an. 3, 641. MED. I. 82. fg. = शुद्ध und असंकाय UNĀDĪVṚTI im SAKṢHĪPTAS. ÇKDr. अस्माकमस्तु केवलः RV. 1, 7, 10. 13, 10. माध्यदिनं सर्वं केवलं ते 4, 33, 7. 7, 98, 5. 10, 54, 5. 138, 6. पतिं मे केवलं कुरु gieb mir zu eigen 143, 2. 173, 6. सोमं यश्चे केवलम् sich zugeeignet hat AV. 11, 7, 36. 3, 10. 7, 37, 1. 9, 4, 12. 10, 8, 4. सूत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः RV. 1, 37, 6. सुधेः पतिं कृणुते केवलैर्न्द्रः (der Padap. केवला mit einer falschen Auflösung des Saṁdhi: es sollte nach dem gewöhnlichen Gebrauch केवलाम् in Saṁhitā und Padap. geschrieben sein, da die Elisionen aufgelöst zu werden pflegen. Bemerkenswerth ist aber das fem. auf आ im Veda) 4, 23, 6. AV. 3, 23, 4. केवलीन्द्राय डडुके हि गृष्टिः 8, 9, 24. केवलेन नः यमुनेष्टमस्तु At. Br. 2, 8: केवलसूक्तानि 6, 9. TS. 1, 3, 1, 2. कथा पुत्रस्य केवलं कथा साधारणं पितुः 2, 6, 1, 7. केवलीरापधीरभन्ति केवलीरपः पिबन्ति sie essen die Kräuter für sich allein und trinken das Wasser lauter ÇAT. Br. 1, 6, 1, 15. 3, 6, 1, 7. एषा केवली यत्सोमाहुतिः das Soma - Opfer ist ausschliessend (ohne andere Zuthat) 1, 7, 1, 10. केवलबर्हिः प्रथमं क्विर्वति समानबर्हिषी उत्तरे das erste Opfer hat seine eigene Streu, für die beiden folgenden ist dieselbe gemeinsam 2, 2, 1, 16. KĪTJ. ÇA. 26, 7, 34. ÇĀKṢH. ÇA. 13, 3, 20. ÇVETĀÇV. Up. 1, 11, 4, 18. 6, 11. — कृत वीतस्व वैदेहि यद्रूपं मम केवलम् R. 5, 33, 32. BṛĀG. P. 6, 4, 26. स्वराख्यं प्राप्य केवलम् MBh. 14,

408. किं तया क्रियते लक्ष्म्या या वधुरिव केवला । या न वेश्येव सामान्या पथिकैरुपभुज्यते ॥ PAṆĀT. II, 141. नोदाहरेदस्य नाम परात्ममपि केवलम् den blossen Namen (ohne weitem Zusatz) M. 2, 199. 3, 64. अर्थेण तत्कुमारीणामानुशंस्यं च केवलम् 54. अर्थं स केवलं भुङ्क्ते nichts als Sünde 118. इष्टोः पार्वयाणां लीयाः केवला निर्वपेतसदा 4, 10, 204. 239. 6, 21. 8, 24. 10, 71. JĀĒN. 1, 200. BṛĀG. 5, 11. DRAUP. 4, 17. MBh. 4, 1927. 1929. R. 3, 40, 18. 43, 37. 46, 18. PAṆĀT. I, 27. 202. II, 100. V, 13. ÇĀK. 139. RAGH. 2, 63. KUMĀRAS. 2, 34. 3, 12. BṛĀG. P. 9, 4, 40. SĪH. D. 12, 2. केवलार्थपरं R. 2, 42, 7. DAÇ. 1, 28. जगत्केवलकाम्यया MBh. 2, 1544. केवलेप्सया 559. 548. केवलनैयायिक ein purer Logiker P. 2, 1, 49. Sch. एवं तन्वाभ्यासात्वास्ति न मे नार्हमत्यपरिशेषम् । अविपर्ययादिश्रुद्धं केवलमुत्पद्यते ज्ञानम् ॥ SĪKṢHJAK. 64. PAṆĀT. V, 12. BṛĀG. P. 2, 6, 39. — b) missgünstig, neidisch (कुट्टन) H. an. MED. — c) (in sich abgeschlossen) ganz, gesamt, alle insgesamt, = कृत्स्न AK. 3, 4, 26, 205. H. an. MED. कृत्यादि भगवान्कुट्टनैः लोक्यमपि केवलम् MBh. 13, 2686. व्योम संकाय केवलम् 3, 15168. केवला रात्रिम् 4, 1485. अवाचः परूषा वाचो धर्ममुत्सृज्य केवलम् 1925. 13, 172. यश्चेतान् (कामान्) प्राप्नुयात्सर्वान्यश्चेतान्केवलोत्पद्यते M. 2, 95. — 2) केवलम् adv. a) nur: दुष्कलीना दुरासेवा केवलं स्त्री तु सा स्मृता R. 3, 23, 15. केवलं तु सहाया मे कृन्मत्प्रमुखा इमे 4, 8, 24. यदि रामः समुद्रात्तां मेदिनीं परिवर्तयेत् । अस्याः कृते जगत्सर्वमनुमन्येत केवलम् ॥ 5, 18, 35. पुरुषाणां नृपाणां च केवलं तुल्यमूर्तिता Suçr. 1, 122, 18. 2, 166, 1. PAṆĀT. 10, 15. 31, 7. 92, 22. 262, 6. Hit. Pr. 11. 28, 13. ÇĀK. 47. 23, 6. RAGH. 1, 24. 3, 20. BṛĀG. P. 1, 2, 8. ततो न शब्दमात्रदेव केवलं (tautol.) भेदव्यम् PAṆĀT. 20, 9. न केवलम् nicht nur — अपि sondern auch: (मङ्गलतूर्णनिस्वनाः) न केवलं सन्ननि मागधीपतेः पथि व्यज्जम्भत दिवौकसामपि RAGH. 3, 19. 31. 12, 13. RĪĒA-TAR. 3, 443. mit Auslassung von अपि RAGH. 12, 67 (ed. Calc. अपि). केवलम् nur — न तु nicht aber ÇĀNGĪRAT. 16. केवलम् = निर्णीतम् entschieden AK. H. an. MED. — b) ganz, vollständig: निशामतिष्ठतपरितो ऽस्य केवलम् (oder ist etwa केवलाम् zu lesen?) die ganze Nacht R. 2, 87, 23. — 3) m. N. pr. eines Fürsten, eines Sohnes des Nara, VP. 333. BṛĀG. P. 9, 2, 30. LIA. I, Anh. xv. — 4) f. केवली die Lehre von der absoluten Einheit, = ज्ञान TRIK. 3, 383. H. an. Vgl. कैवल्य. — b) N. pr. einer Localität MBh. 3, 15245. — 5) n. a) die Lehre von der absoluten Einheit, = ज्ञान TRIK. = ग्रन्थभिद् H. an. = ज्ञानभेद MED. (wo केवली st. केरली zu lesen ist). — b) N. pr. eines Landes (v. l. für केरल) VP. 188, N. 39.

केवलज्ञानिन् (von केवल + ज्ञान) m. N. pr. des 1sten Arhant der vergangenen Utsarpiṇi H. 30. Vgl. SĪKṢHJAK. 64. PAṆĀT. V, 12. BṛĀG. P. 2, 6, 39.

केवलतम् (von केवल) adv. nur Mit. 48, 13.

केवलद्रव्य (केवल + द्रव्य) n. schwarzer Pfeffer ÇABDAR. im ÇKDr.

कैवलाय (केवल + अय) adj. allein schuldig: केवलायो भवति केवलादी RV. 10, 117, 6.

केवलात्मन् (केवल + आत्मन्) adj. dessen Wesen absolute Einheit ist: नमस्त्रिमूर्तये तुभ्यं प्राक्सृष्टेः केवलात्मने । गुणत्रयविभागाय पञ्चाद्वैदमुपेयुषे ॥ KUMĀRAS. 2, 4.

केवलादीन् (केवल + आदिन्) adj. allein essend; s. u. केवलाद्य.

केवलिन (von केवल n.) 1) adj. der der Lehre von der absoluten